

प्रीलमिस फैक्ट्स: 29 अप्रैल, 2020

- [राजा रविवर्मा](#)
- [दक्षिण एशिया मौसमी जलवायु आउटलुक फोरम](#)
- [प्रकृति](#)
- [चक्रमा एवं हाजोंग](#)

राजा रविवर्मा

Raja Ravi Varma

प्रसिद्ध भारतीय चित्रकार राजा रविवर्मा (1848-1906) की जयंती 29 अप्रैल को मनाई जाती है जिन्हें भारतीय चित्रकला में प्रकृतवाद की पश्चिमी संकल्पना तथा हद्वि देवी-देवताओं के शास्त्रीय प्रतिनिधित्व के लिये याद किया जाता है।



मुख्य बदि:

- त्रावणकोर राजघराने से संबंधित राजा रविवर्मा का जन्म वर्ष 1848 में कलिमिननूर गाँव (केरल) में हुआ था।

शाही संरक्षण:

- 14 वर्ष की उम्र में राजा रविवर्मा को त्रावणकोर के तत्कालीन शासक अयलियम थरुनल (Ayilyam Thirunal) का संरक्षण मिला और शाही चित्रकार रामास्वामी नायडू से जलरंगों का तथा बाद में ब्रिटिश चित्रकार थियोडोर जेन्सेन (Theodore Jensen) से ऑयल पेंटिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया।
- त्रावणकोर के अलावा राजा रविवर्मा ने अन्य धनी संरक्षक जैसे- बड़ौदा के गायकवाड़ के लिये भी काम किया।

कलाकृतियाँ:

- इन्होंने प्रतिकृति या पोर्ट्रेट (Portrait) एवं मानवीय आकृतियों वाले चित्र या लैंडस्केप दोनों चित्रों पर काम किया और इन्हें ऑयल पेंट का उपयोग करने वाले पहले भारतीय कलाकारों में से एक माना जाता है।
- हट्टी पौराणिक आकृतियों को चित्रित करने के अलावा राजा रविवर्मा ने कई भारतीयों के साथ-साथ यूरोपीय लोगों को भी चित्रित किया।
- राजा रविवर्मा को लिथोग्राफिक प्रेस (Lithographic Press) पर अपने काम के पुनरुत्पादन में महारत हासिल करने के लिये भी जाना जाता है जिसके माध्यम से उनके चित्रों को विश्व प्रसिद्धि मिली।
- उन्हें भारत में चित्रकला के यूरोपियनकृत स्कूल (Europeanised School of Painting) का सबसे महत्वपूर्ण प्रतिनिधि माना जाता है।
- उनके प्रसिद्ध चित्रों में चाँदनी रात में नारी, सुकेशी, श्री कृष्ण, बलराम, रावण और सीता, शांतनु एवं मत्स्यगंधा, शकुंतला का पत्र लेखन, इंद्रजीत की वजिय, हरश्चंद्र, फल बेचने वाली, दमयंती आदि शामिल हैं।

पुरस्कार/सम्मान:

- इनके द्वारा वर्ष 1873 में बनाई गई पेंटिंग 'अपने बालों को सजाती हुई नायर सत्री' (Nair Lady Adorning Her Hair) ने मद्रास प्रेसीडेंसी एवं वयिना कला सम्मेलन में प्रस्तुत किये जाने पर प्रथम पुरस्कार जीता।
- वर्ष 1904 में ब्रिटिश सरकार की ओर से वायसराय लॉर्ड कर्जन ने राजा रविवर्मा को कैसर-ए-हिंद गोल्ड मेडल (Kaiser-i-Hind Gold Medal) से सम्मानित किया।
- राजा रविवर्मा के सम्मान में वर्ष 2013 में बुध ग्रह पर एक क्रेटर (गड्ढा) उनके नाम से नामित किया गया था।

दक्षिण एशिया मौसमी जलवायु आउटलुक फोरम

South Asian Seasonal Climate Outlook Forum

23 अप्रैल, 2020 को दक्षिण एशियाई मौसमी जलवायु आउटलुक फोरम (South Asian Seasonal Climate Outlook Forum- SASCOF) ने दक्षिण एशिया में आगामी दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान सामान्य बारिश होने की उम्मीद जताई है।

मुख्य बंदि:

- SASCOF अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका, भूटान और म्यांमार सहित दक्षिण एशियाई देशों के मौसम विज्ञानियों एवं हाइड्रोलॉजिकल विशेषज्ञों का एक संघ है।
 - इसे [विश्व मौसम विज्ञान संगठन](#) (World Meteorological Organization- WMO) के समर्थन से वर्ष 2010 में स्थापित किया गया था।
 - इसमें शामिल देश कषेत्रीय पूर्वानुमान जारी करने के लिये सामूहिक रूप से काम करते हैं और प्रत्येक वर्ष दक्षिण-पश्चिम एवं उत्तर-पूर्व मानसून से संबंधित पूर्वानुमान जारी करते हैं।
 - अफगानिस्तान जो उत्तर-पश्चिम में स्थित है, को छोड़कर ये सभी दक्षिण एशियाई देश दक्षिण-पश्चिम मानसून की तरह सामान्य मौसम एवं जलवायवीय संबंधी विशेषताओं का सामना करते हैं।
- SASCOF को एक ऐसे मंच के रूप में स्थापित किया गया था जहाँ म्यांमार के साथ [दक्षिण एशियाई कषेत्रीय सहयोग संगठन](#) (South Asian Association of Regional Cooperation- SAARC) के सदस्य देशों के मौसम विज्ञानी सामान्य मौसम एवं जलवायु से संबंधित मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं।

SASCOF के कार्य:

- यह कषेत्रीय पैमाने पर आम सहमत वाली एक मौसमी जलवायु संबंधी सूचना तैयार करता है जो राष्ट्रीय स्तर के आर्थिक दृष्टिकोण तैयार करने के लिये आधार प्रदान करते हैं।

प्रकृति

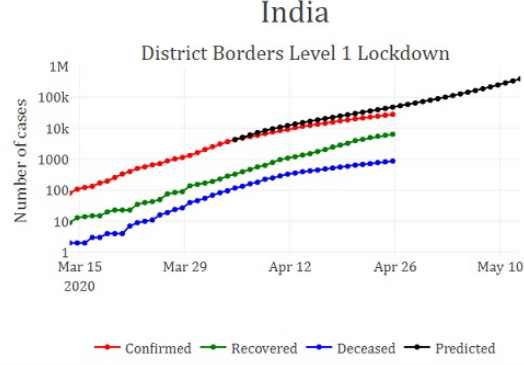
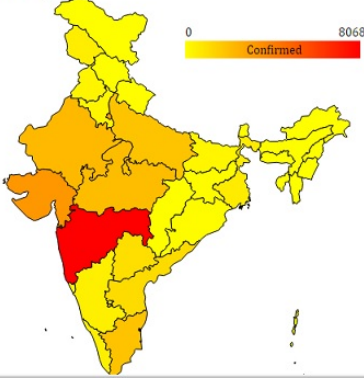
PRACRITI

हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, दिल्ली के शोधकर्त्ताओं ने भारत में COVID-19 के प्रसार की भविष्यवाणी करने के लिये एक वेब-आधारित डैशबोर्ड 'प्रकृति' (PRACRITI) विकसित किया है।

- प्रकृति (PRACRITI) का पूर्ण रूप 'PRediction and Assessment of CoRona Infections and Transmission in India' है।



Back Select map



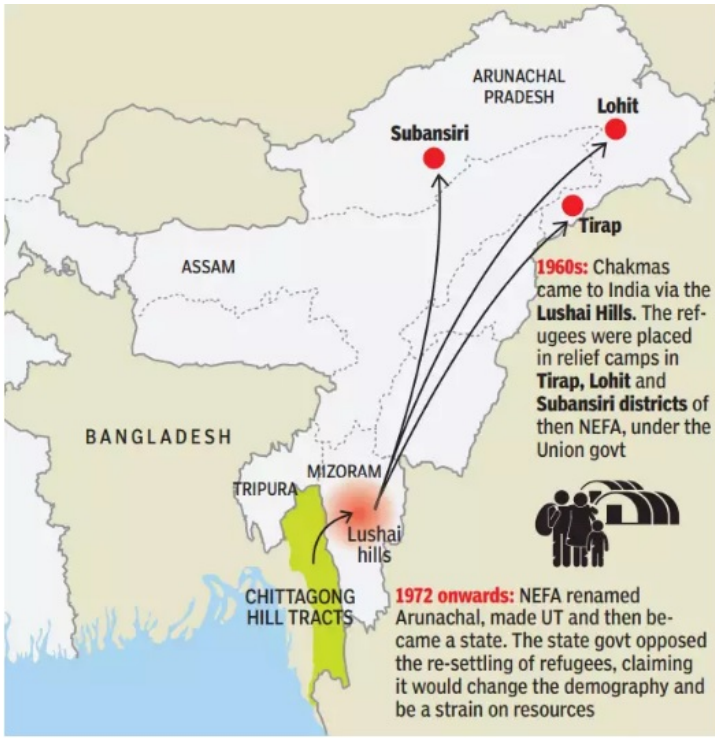
मुख्य बढि:

- यह वेब-आधारित डैशबोर्ड भारत में तीन सप्ताह की अवधिक COVID-19 मामलों की राज्य एवं ज़िलेवार वसितृत भविष्यवाणियों प्रदान करता है।
 - प्रशासनिक हस्तकषेप, वायरस संक्रमण का संकट, मौसम के पैटर्न में बदलाव के कारण वभिन्न प्रभावों को समायोजति करने के लयि डेटा को साप्ताहिक आधार पर अपडेट कयिा जाता है।
- यह वभिन्न लॉकडाउन परिदृश्यों जैसे- ज़िले की सीमाओं को बंद करने और एक ज़िले के भीतर लॉकडाउन के वभिन्न स्तरों को लागू करने के प्रभावों का भी उल्लेख करता है।
- इसमें COVID-19 के मद्देनज़र ज़िला/राज्य की सीमाओं में लोगों की आवाजाही का प्रभाव भी शामिल कयिा गया है।
- प्रकृति (PRACRITI), केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (Union Ministry of Health and Family Welfare), [राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण](#) (National Disaster Management Authority- NDMA) और [वशिव स्वास्थ्य संगठन](#) (World Health Organization- WHO) से उपलब्ध आँकड़ों के आधार पर प्रत्येक ज़िले एवं राज्य के R0 परणामों (R0 Values) को प्रदान करता है।
 - पुनुरुत्पादक संख्या (Reproduction number- R0) जसिका उच्चारण 'आर नाॉट' (R naught) के रूप में कयिा जाता है, उन लोगों की संख्या को बताता है जनिमें संक्रमण से संबंधित बीमारी कसिी एक संक्रमति व्यक्तिसे फैलती है। उदाहरण के लयि यदिएक COVID-19 रोगी दो व्यक्तियों को संक्रमति करता है तो R0 मान दो होता है।

चकमा एवं हाजोंग

Chakma and Hajong

हाल ही में 'अधिकार एवं जोखमि वशिलेषण समूह' (Rights and Risks Analysis Group) ने अरुणाचल प्रदेश में चकमा (Chakma) एवं हाजोंग (Hajong) समुदायों हेतु भोजन सुनिश्चित कराने के लयि भारतीय प्रधानमंत्री के हस्तकषेप की मांग की है।



मुख्य बटु:

- चकमा एवं हाजोंग समुदायों को कथति तौर पर COVID-19 महामारी के मद्देनजर केंद्र सरकार द्वारा घोषति [COVID-19 आरथकि राहत पैकेज](#) में शामिल नहीं कथिा गया है ।
- चूक दोनों समुदायों के सदस्य कानूनी रूप से भारत के नागरकि बन गए हैं इसलए भोजन से वंचति करना संवधिन के अनुच्छेद 21 का उल्लंघन है ।

चकमा (Chakma) एवं हाजोंग (Hajong):

- ये नृजातीय लोग हैं जो चटगाँव पहाड़ी इलाकों में रहते थे जसिका अधकिंश भाग बांग्लादेश में स्थति है ।
 - चकमा मुख्य रूप से बौद्ध हैं जबकि हाजोंग लोगों का संबंध हद्वि धरु से है । ये मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत, पश्चिमी बंगाल, बांग्लादेश एवं म्यांमार में नविस करते हैं ।
- चकमा एवं हाजोंग शरणार्थी मूलतः पूर्वी पाकसितान के चटगाँव हलि ट्रैक्ट्स (Chittagong Hill Tracts) के नविसी थे कति बांग्लादेश में कर्नाफुली (Karnaphuli) नदी पर बनाए गए कपटाई बाँध (Kaptai dam) के कारण जब वर्ष 1960 में उनका क्षेत्र जलमग्न हो गया तथा बांग्लादेश में धारुमकि उत्पीड़न का सामना करने के कारण इन दोनों समुदायों ने असम की लुशाई पहाड़ी (जसि अब मज़ोरम कहा जाता है) के माध्यम से भारत में प्रवेश कथिा ।
 - इसके पश्चात् भारत सरकार द्वारा अधकिंश शरणार्थियों को उत्तर-पूर्व सीमांत एजेंसी (जसि अब अरुणाचल प्रदेश कहा जाता है) में बनाए गए राहत शिविरों में भेज दथिा गया ।
- वर्ष 2015 में सर्वोच्च न्यायालय ने भारत सरकार को अरुणाचल प्रदेश में रह रहे अधकिंश चकमा और हाजोंग शरणार्थियों को नागरकिता प्रदान करने का आदेश दथिा था ।
- उल्लेखनीय है कथिे दोनों समुदाय नागरकिता संशोधन अधनियम (Citizenship Amendment Act- CAA), 2019 के दायरे में नहीं आते हैं क्योकि अरुणाचल प्रदेश, CAA से छूट प्राप्त राज्यों में से एक है ।
 - वर्तमान में चकमा एवं हाजोंग नागरकिता अधनियम की धारा 3(1) के अनुसार जनुम से नागरकि हैं और इनके पास भारत के नागरकि के रूप में वोट देने का अधकिार है । इन्हें वर्ष 2004 में मतदान का अधकिार दथिा गया था ।